पनघट रहा उदास

•

शिवकुमार

•

•

हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
वाराणसी कलकत्ता

प्रकाशक
हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय
पिशाचमोचन, वाराणसी
१९५/१, हरिसन रोड, कलकत्ता ७

मूल्य तीन रुपये

प्रथम संस्करण १९६३ ई०

आवरण श्री शशिकान्त

मुद्रक नागेन्द्र शर्मा
जनवाणी प्रिण्टर्स एण्ड पब्लिशर्स प्रा० लि०,
३६ वाराणसी घोष स्ट्रीट कलकत्ता-७

प्रवश

श्री शिवकुमार खेडिया ने अभी जीवन के केवल बीस वसन्त देखे हैं, तरुण हैं। भावुक, कला प्रेमी तथा कलाकार। उनकी कला उनकी सुरुचि में, रहन-सहन में, आचार विचार में और शब्द शब्द में अभिव्यक्ति पाती रहती है। उनके गीत और अगीत अनुभूतियो के चलचित्र ह, जो हमस कुछ कहते हैं, और हम उन्हें मन से सुनत हैं, केवल काना से नहीं। मन मे उनका प्रभाव पडता है।

साधना के ये स्वर हमारी सहानुभूति एव सराहना की अपेक्षा करते ह, समालोचना की नहीं, क्योकि वे साहित्यकार बनने का दावा नही करते, साहित्य के उपासक के रूप में हिन्दी माता के मदिर में अपने भावा की कुसुमाजलि लेकर आए हुए हैं। मातृ-वदन के लिए। उनके ये फूल श्रद्धा से सुगधित हैं, सुकुमार भावनाओ से अनुबधित।

शिवकुमार का कलाकार कवि उन अनेक अज्ञात साधका की पक्ति म है, जो जाने-अनजाने साहित्य की साधना में रत रहता है, और एक दिन अचानक उसका नाम इतिहास क पृष्ठो में चमकने लगता है क्योकि उसने साहित्य को अर्थाजन का माध्यम नही बनाया है। बनाया है माध्यम आत्माभिव्यक्ति का, जिसे, कहे बिना वह नही रह पाता, और जिसे सुने बिना हम नही रह पाते। गीता की अपेक्षा अगीत छन्दो में स्वच्छन्दता से वह हमसे मिलता है और निर्झरिणी, कलकल प्रवाहिनी की अमन्द धारा से हम अभिषिक्त कर देता है। आनदित कर देता है! छन्दा का बधन उसकी अभिव्यक्ति को रुचिकर नही लगता, उसकी शक्ति को कुठित कर देता है। भावो का उद्वेग अबाध गति चाहता है। और अगीता में गीता की अधिकाधिक मधुरिमा लेकर ध्वनित एव प्रध्वनित हो उठता है।

जहाँ,

गा रहे ह गीत में हर स्वर तुम्हारे,
स्नेह पाकर जल गए ह दीप सारे।

कहकर, वह मौन हो जाता है।

वहाँ,

ओ चाँद!
जाओ सुबह हो रही है!

तुम्हारे चमन को जलाने !
तुम्हारे चमन को मिटाने !
किरण बिखर रही है
धूप निखर रही है
पूरब गा रहा है
सूरज आ रहा है,
ओ चांद !
जाओ सुबह हो रही है !

ओ चाद !
म भी तुम्हारा मीत हूँ
मैं भी गा रहा गीत हूँ
क्योंकि
जो मुझ पर गुजर रही है
वही तुम पर भी गुजरेगी !
जो मुझ पर बिखर रही है
तुम पर भी बिखरेगी !
ऐ दोस्त !
दोस्ती का तकाजा,
तुम न सही म निभा रहा हूँ।
ओ चाद !
जाओ सुबह हो रही है !

अगीत छदा में अजस्रगति से प्रवाहित हो उठता है, जो रोके नहीं रुकता, भावोच्छवास की भाति ! एक तूलिका की भाति जो अप्रयास उठती है, और एक भावभूति का चित्र अकित करके रुक जाती है।
निश्चय ही साहित्यवेत्ता, जो मुझ पर गुजर रही है शब्दविन्यास से चौंकेंगे, लेकिन, यह उसकी भाषा है। उसकी खामी भी, उसकी खूबी भी, जो उसीकी है दूसरे की नहीं।
शिवकुमार का कवि केवल आकाश से ही नहीं, धरती से भी अपनी प्रेरणा ग्रहण करता है। और मुझे लगता है धरती की गध उसके प्राणो के अधिक निकट है। धरती की सवेदना ने उसकी अनुभूति को विगलित किया है। करुणा से प्लावित और वे भावानुभूतियो के मर्मस्पर्शी चित्रण हमारे हृदय पर

अमिट छाप अंकित कर जाते हैं। बात यह है कि हकीकत खुद ही मनवा लेती है, मानी नहीं जाती है। प्रमाण नीचे है—

मेरे दोस्त !
यह मेरी आँखों का भ्रम है, या सत्य है।
कि म खड़ा हूँ ककाल की तरह !
और सारी दुनिया घूम रही है
चलती गाडी के पहियो की तरह !
मेरे मीत !
यह मेरे दिल की कमजोरी है
या झूठ है कि
दूसरे का ग़म देखकर
जब भी म रोता हूँ
सारी दुनिया मुझ पर हँसती है
और देती है तानें
कि
तुमको तुम्हारी नहीं
तुम्हारे पसे की जरूरत है।

कितना कटु सत्य है यह ! तीव्र व्यग है मानवता की सहृदयता पर, दुनिया के एकागी दृष्टि पर निमम प्रहार है।
नवोदित कवि के परिचय को म प्रशस्ति नही बनाना चाहता, न उसकी आकाक्षा ही है। आकाक्षा है तो यही कि उसकी श्रद्धा को गुरुजनो का आशीर्वाद प्राप्त हो, स्नेह का सबल प्राप्त हो, जिससे वह अपनी साधना के पथ पर अग्रसर हो सके। मुझे विश्वास है, पाठका से उसे प्रचुर प्रोत्साहन प्राप्त होगा।

— सोहनलाल द्विवेदी

स्वागत के स्वर

पायलो की रनझुन से गुंजरित पनघट किन्हीं विरल क्षणो में उदास हो जाता है। सूनी पगडंडी, थके चरण चिह्न और गुमसुम वातावरण। "पनघट रहा उदास" जीवन की उन्हीं विरल अनुभूतियो को शब्दबद्ध करने का यह प्रथम प्रयास है। कविताओ में अनुभूति के प्रति सचाई है और अभिव्यक्ति की सादगी। भाषा अभी न वक्रत्व की ओर मुडी है और न भावो की गहराई में खोई है। जीवन की सहज सरल बातें सुकुमार कल्पना के पखो पर उडने का उपक्रम कर रही है, भविष्य में विशाल गगन में उन्मुक्त उडानें ले सकेंगी, इस आस्था व अडिग विश्वास के साथ साहित्य-मन्दिर में तरुण कवि श्री शिवकुमार का हार्दिक स्वागत है।

–अक्षयचन्द्र शर्मा

आत्मनिवेदन

कविताओं का यह प्रथम प्रसून आपके सम्मुख रखते हुए न जाने भावनाएँ क्यों बेहाल हो रही हैं। सोचता हूँ "पनघट रहा उदास" की पगडंडियां क्या आपकी राहों से मिल सकेंगी ?

हिन्दी-कविता के अनुराग ने मुझे विवश किया कि मैं भी कुछ अपने मनोभावों को अभिव्यक्ति दूं, कुछ गीत के माध्यम से, कुछ अगीत के माध्यम से। "पनघट रहा उदास" में सग्रहीत रचनाएँ मेरी साधना के स्वर हैं। प्रेमी पाठकों से वे और प्रोत्साहन की अपेक्षा करती हैं। हिन्दी-माता के मन्दिर में सभी को अपने श्रद्धासुमन चढ़ाने का अधिकार है, उन सुमनों में कितनी सुगन्ध है, यह बात दूसरी है।

मैं नहीं जानता कि मैं अपने पूज्यवर श्रीमान पण्डित सोहनलालजी द्विवेदी के प्रति किन शब्दों में अपनी कृतज्ञता प्रकट करूं, जिन्होंने मुझको कविता लिखने के लिये प्रेरित तो किया ही, साथ ही भूमिका लिखकर पुस्तक का गौरव भी बढ़ाया है। माननीय श्रीयुक्त अक्षयचन्द्रजी शर्मा का मैं अत्यन्त आभारी हूँ, जिनके सहयोग से मुझे पुस्तक के प्रकाशन में बहुत सहायता मिली है और साथ ही प्रेरणा भी। मैं श्रीयुक्त श्री नीरज, श्री वीरेन्द्र मिश्र, श्री बरुआ, श्री शेखर को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनके साहचर्य और स्नेह से मुझे काफी प्रेरणा मिली है। आशा है, मेरी भावना को स्नेह का सबल प्राप्त होगा।

५ स्टनडल रोड
अलीपुर कलकत्ता २७
रामनवमी, स० २०२०

— शिवकुमार

●●●

क्रम

●●●



ओ देव।
पनघट की उदास
पगडंडियों पर
मेरे गीत
मील बन बन कर
थके हारे राही को
विश्राम दे।

—शिवकुमार

पनघट रहा उदास

१

ओ सूरज की अरुणिम
किरणो !
मेरे कलुषित
कम्पित उर को
ज्योतित कर दो,
पक भरे जीवन शतदल को
अपने पावन-स्नेह स्पर्श से
पुलकित कर दो,
विकसित कर दो।

जीवन की वीणा के सोये
इन तारो को जागृत कर दो,
झंकृत कर दो।
मुखरित कर दो!

नभ से उतरो
ज्योति जलद बन
उर के कण-कण को
नहला दो।
मेरा उन्मन मन बहला दो! ●

ओ चाँद ! जाओ,
सुबह हो रही है।

ओ चाद !
तुम्हारे चमन को जलाने,
तुम्हारे कफन को बनाने,
किरण बिखर रही है,
धूप निखर रही है,
पूरब गा रहा है,
सूरज आ रहा है,
ओ चाँद ! जाओ,
सुबह हो रही है।

ओ चाद !
मैं भी तुम्हारा मीत हूँ,
क्योंकि
वही गुजर रही है,
जो तुम पर गुजरेगी,
वही निखर रही है,
जो तुम पर निखरेगी।

ऐ दोस्त !
दोस्ती का लिहाज
और
तकाज़ा
तुम न सही
मैं निभा रहा हूँ।

ओ चाँद ! जाओ,
सुबह हो रही है। •

तीन

दे न सकूँगा दान
तुम्हें हर रात
गगन के चाँद!
नही अब द्वार मेरे
याचना के शब्द लेकर
गीत गाना।

चल न पाऊँगा
तुम्हारे सग लहरो पर,
गगन में उड न पाऊँगा,
जनम भर प्यार का यह गीत
हर पल गा न पाऊँगा,
तुम्हारी चाँदनी को
रागिनी के स्वर
सदा मै दे न पाऊँगा।

तुम्हारा स्नेह
उर की पीर को सहला रहा
मै मानता हूँ,
आज तुम मुहताज होकर
विवश होकर
द्वार मेरे रो रहे हो, सो रहे हो,

जानता हूँ,
और कब तक के लिये
तुम मीत मेरे,
स्नेह तेरा, प्यार तेरा,
झुक रहा है, द्वार मेरे
यामिनी में,
चांद मुझको छल रहे हो तुम
जनम से
छवि तुम्हारी
एक छलना,
मैं इसे पहचानता हूँ।
पर तुम्हें अधिकार इतना दे रहा हूँ
पास मेरे तुम तभी आना,
सूर्य की किरणें तुम्हारे पास
आकर
जब तुम्हें निष्प्रभ बना दें
और मेरे गीत के स्वर
फिर तुम्हारा स्नेह से
स्वागत करेंगे।
क्योंकि तुम भी
जान पाओगे
जगत को और
अपनी जिन्दगी को। •

चार

मत मेरी पलकों को छूना
ये हाथ तुम्हारे कहीं न गीले हो जायें,
ये स्वप्न तुम्हारे यहीं न तुमसे खो जायें।

(१)

तुम मधुवन में पलनेवाली खिली कली!
क्यों धूलों से नेह लगाने आई हो?
तुम आंसू से डरनेवाली हो सुकुमारी,
क्यों सावन में तुम दीप जलाने आई हो?
मत मेरी अलकों को छूना
मुसकान तुम्हारी कहीं न उनमें खो जाये।

(२)

मेरा परिचय पाना हो, तो आना तब
जब काजल का रंग नयनों से धुल जाये,
मेंहदीवाले हाथों में जब भी धूल लगे,
सुकुमार अँगुलियों का कोमलपन खुल जाये।
मत मेरी साँसों को छूना
ये सांस तुम्हारी कहीं न मुझसे खो जाये।

(३)

मन की ही होती है ऐसी कुछ मजबूरी,
दुख में सब का ही जीवन घबडाता है।
इसलिए, न आना, मेरे द्वारे तुम,
सागर की लहरों से घन भी थर्राता है।

मत मेरी रातों को छूना
ये तान तुम्हारी कही न पीडा हो पाये।
मत मेरी पलकों को छूना
ये हाथ तुम्हारे कही न गीले हो जायें। •

पाँच

जब घटा घिरा करती नभ पर
तब याद तुम्हारी आती है!

रजनी के नीरव गगन तले
सूनी सरिता लहराती है,
बुझते दीपक-सा तन-मन ले
मन की बाती कँप जाती है।

पलकों के घूंघट में हर पल
तसवीर तुम्हारी गाती है
तब याद तुम्हारी आती है!

विस्मृति की सुखकर-सी बेला
अन्तर आँगन में छाती है,
प्रतिध्वनि बन अधर कगारों पर
बस आ-आ कर टकराती है।

मन के वृन्दावन में क्षण-क्षण
बासुरिया तान सुनाती है,
तब याद तुम्हारी आती है!

ओ सांसो के सौदागर
तुम्हारा घर कहाँ है ?

तुम्हारी मेहनत देखकर
मेरा धैर्य टूट रहा है,
तुम्हारा विश्वास देखकर
मेरा नियम टूट जाता है,
और,
तुम गम में भी मुस्कराते हो,
खिलखिलाते हो,
मगर
तुम्हारा विश्राम कहाँ है ?
ओ सांसो के सौदागर
तुम्हारा घर कहाँ है ?

तुम्हारी दुश्मनी
मुझे दोस्ती सिखाती है
तुम्हारी जलन
मुझे नम्र बनाती है,
और,
यह आकर्षण
मुझको खीच ले जाता है

तुम्हारे द्वार तक
मगर उसका पथ कहाँ है?
ओ साँसो के सौदागर!
तुम्हारा घर कहा है?

मेरे पास आसू ह
गम हैं, आहे ह,
जो तुम्हें देखकर
छुपेगी
फिर भी
तुम्हे दे दूगा,
क्योकि
म तुम्हारा मीत हूँ
और,
उनका मूल्य
तराजू पर नही
अधरो पर आँकोगे
इस सौदे से साथी,
मोती के दाम पाओगे
मगर
तुम्हारा बाजार कहाँ है?

ओ सासो के सौदागर
तुम्हारा घर कहा है? •

सात

गम आँसू और हँसी

मेरे दोस्त !
यह मेरी नजरो का भ्रम है,
या सत्य है
कि
मैं खडा हूँ
ककाल की तरह
और
सारी दुनिया घूम रही है
चलती गाडी के
पहिये की तरह ।

मेरे मीत !
यह मेरी दिल की कमजोरी है
या झूठ है
कि
दूसरे का गम देखकर
जब भी मैं रोता हूँ
सारी दुनिया
मुझ पर हँसती है

और,
देती है तानें
कि
गम को तुम्हारी नही,
तुम्हारे पैसे की जरूरत है। •

बरसो तक जिस डाली का मैं हार बना,
जिस डाली में वरसो तक मुझको प्यार मिला,
वह डाली मुझ से रुठ गई,
उस डाली से म टूट गया।

हर पथी मुझको रौद रहा है पाँव तले,
किरणो ने कैसी पथ पर आग बिछाई है,
धरती भी रोती है मेरी मासूमी पर,
उपवन की वह डाली मन में अकुलाई है।

ऐ माली ! क्यो तू मुझ से इतना रुठ गया,
सच वतलाना, क्या मुझ से कोई भूल हुई,
यह कैसा पतझर आया मेरे उपवन में,
बचपन की साथी कलियाँ जो पथ-शूल हुईं।

बरसो तक जिस क्यारी का मैं फूल बना,
जिस क्यारी से वरसो तक मुझको रूप मिला,
वह क्यारी मुझ से रूठ गई,
उस क्यारी से मैं छूट गया।

वरसो तक जिस डाली का मैं हार बना,
उस डाली से म टूट गया। •

नौ

चाँद से मत चाँदनी मागो !
वेदना के स्वर करुण जब गीत गाते हृ ,
वीण से मत रागिनी मागो ।

कुज-उपवन मे पपीहा बोलता है,
विकल क्षण की बात मन जब खोलता है,
पथ पर यदि चल पडे हो पाव थककर,
शूल फूलो-सा मधुर रस घोलता है ।

दीप से मत ज्योति-कण मागो,
स्निग्ध मन की वर्तिका जब जगमगाती हो,
चाद से मत चादनी मागो !

मूक लहरो का निमत्रण आ गया जब,
मत कहो माझी मुझे त पार ले चल,
और बादल से नही बरसात मागो,
आख से जब बरसते हो मेघ अविरल !

चाद से मत चादनी माँगो !
वेदना के स्वर करुण जब गीत गाते हृ ,
वीण से मत रागिनी मागो !

दस

पूर्णिमा की रात
मेरी भावनाएँ हो रही मधु स्नात !
पूर्णिमा की रात ।

कुज उपवन
और
सागर की लहर पर
खिल रहा यौवन
गगन की चादनी का
यामिनी में
आज मेरा मन विकलता से भरा है
गगन के चाद को छूने
लिपट कर अक मे सोने
सुनहले स्वप्न की उन्मादिनी मे
चाँदनी में !

प्रतिविम्ब मेरा बढ रहा है
और अपने पाव के नीचे दबाकर
चाद-तारो को
यही मैं सोचता हूँ
स्वप्न ही केवल बनू म नभ गगन में

भावना केवल नही यह विकल मन मे
चाहता हूँ मैं इसे साकार कर दू
और धरती का सुनहले स्वप्न से
शृंगार कर दूँ!

हर निशा में, हर दिशा में
ज्योति का विस्तार भर दूँ
और पथ पर
गति-प्रगति के प्रथम अथ पर
रस कलश उपहार कर दू
मैं नया ससार धर दू!

और,
मेरा सोचता है मन
उमगें पल रही हर क्षण
न आये अब कभी भी प्रात।
हर अमा बन जाय जग में
पूर्णिमा की रात! ●

ग्यारह

जितना ही तुम से दूर हुआ,
उतना तुम पर विश्वास बढा।

जब भी चाहा ऐसा मैंने
अब याद नही तेरी आये,
उतना ही दिल मे दर्द हुआ
उतने ही आसू ढल आये।

जितनी ही मैंने रोकी उच्छ्‌वासें,
उतना ही बढकर विश्वास बढा।

जितना सपनो को समझाया
अब नींद मुझे भी आती है,
उतने ही स्वप्न घिरे घन से,
उतने ही याद रुलाती है।

जितना ही तुम से दूर हुआ,
उतना तुम पर विश्वास बढा।

बारह

हीरे-मोती के हार नही है पास प्रिये,
गीले आँसू के हार तुझे पहनाऊँगा।

रागिनी वीण के तारो से है रूठ गई,
साँसो की ही धडकन तुझे सुनाऊँगा।

मेरे उपवन में नही बहारें हँसती हैं,
पतझर में खिलती कलियाँ तुझे दिखाऊँगा।

मेरे आँगन मे कभी न चन्दा मुसकाया,
रोते दीपक का हँसना तुझे दिखाऊँगा।

यह फूलो की है सेज नही जो सो जाओ,
शूलो को मैं फूलो से मधुर बनाऊँगा।

है प्रीति लगाई मैने तुमसे जीवन में,
अन्तिम साँसो तक नही तुम्हे बिसराऊँगा। •

तेरह

जैसे ही घर के आँगन में
पाँव रखा
नन्हें बालक की
तुतली बातों में आकर
मेरी आखें भर-भर आयी।

बालक बोला—
(आँखो में आँसू भर-भर कर)
आज शाम को घर के आगे
खेल रहा था
मेरा साथी,
माता ने आवाज लगायी
अपने घर से
बालक दौड़ा
इतना कहकर
आता हूँ
जल्दी आता हूँ।

मेरा साथी भाग रहा था
चौराहे से
अपने घर को,
इसी समय आ गई अचानक

गाडी एक
बालक चीखा बडे जोर से
और चीख के साथ
वहीं पर
तडप रहा था
सिसक रहा था
रक्त भरा वह नन्हा साथी।
मेरा साथी।

बालक के सग
माता ने भी साथ दिया जब
इतना कहकर
पल भर को तो आये अनगिन
राहगीर सब
जाते-जाते नही किसी ने
दया दिखायी
नही किसी के मन प्राणो मे
स्नेह सिक्त करुणा लहरायी
नही किसी ने कहा वहाँ पर
खडी हुई
उस शोक-गर्त में
गडी हुई से
सहसा ही दुर्भाग्य-चक्र में
पडी हुई से।

मेरा उर भी चीख उठा यह सुनकर जब
वह रईस भी चला गया
बालक की माँ को
पैसे देकर,

लेकिन वह कुछ जान न पाई
रही ताकती मूक दृष्टि से
जड़ प्रतिमा-सी।

यह जग का व्यवहार घाव कब भर पाता है!
जो गिरता है, यहां न गिरा ही रह जाता है!
हृदय आह भर करके मेरा तब रह जाता है। ●

चौदह

तेरे सपने हमारे दिल को अब भी याद आते हैं,
यह आई रात कैसी है कि आंसू गीत गाते हैं।

मेरी बगिया में जिस दिन से तुम्हारे फूल हैं टूटे,
मुझे लगता जमाने भर से मेरे गीत हैं रूठे।

फलक में जब कि चंदा और तारे मुस्कुराते हैं,
मुझे गुजरे जमाने के नज़ारे याद आते हैं। •

7

दो मुक्तक

रात भर की नींद थी, सुबह भी सोने न पाया,
क्या करूँ कल का भरोसा, कल किसी का भी न आया।
जिन्दगी में जी रहा हूँ, किस तरह मत हाल पूछो,
आह भर ली मौन हो, खुलकर कभी रोने न पाया।

आग बनने को समुन्दर बह रहा है,
बात सच है, जो जमाना कह रहा है।
कौन किसके दर्द का साथी यहाँ है,
चाँद नभ के आँसुओं में ढह रहा है। •

सोलह

तुम कौन अपरिचित आये ?

मेरे सुप्त स्वप्न को
जाग्रत करने
भरी निशा में
शून्य दिशा में
व्यथित हृदय को
पुलकित करने
मुखरित करने
तुम कौन अपरिचित आये ?

मेरे जीवन के उपवन के
बद सुरभि के द्वार खोलने
कुसुम भार से लदी हुई
हर डाल तोड़ने
नेह नीर से बँधी हुई
पतवार खोलने ।
तुम कौन अपरिचित आये ? •

सत्रह

मै गा-गा करके गीत, मीत, अपनी पीडा सहलाता हूँ।

अधरो पर प्यास मचलती है, खारे आँसू को पीता हूँ,
जब आँसू भी रुक जाते है, पतझर-सा जीवन जीता हूँ।

किसको है अवकाश यहाँ, जो मेरी गाथा सुन पाये,
झोली तो फैलाता हूँ, पर खाली हाथो आता हूँ।

मै गा-गा करके गीत, मीत, अपनी पीडा सहलाता हूँ।

मेरी रातो की किस्मत मे है सुबह कहाँ जो मुसकाये,
वीराने मे अरमानो का, मै महल बनाता जाता हूँ।

जब दौलत थी मेरी झोली मे, जग ने गले लगाया था,
गागर मे जब बचा नही कुछ, तब से ठोकर खाता हूँ।

मै गा-गा करके गीत, मीत, अपनी पीडा सहलाता हूँ। •

अठारह

शरद की रात, चंदा की किरण तुझको बुलाती है,
चमन के द्वार फूलों की खिलन तुझको बुलाती है।

तुम्हें है प्यार की सौगंध मत यह भूल जाना तुम,
निशा की चाँदनी में हर लहर के साथ आना तुम,
तुम्हारे प्यार का पाकर निमंत्रण जी रहा हूँ मैं,
तुम्हारी याद में अमृत नयन के पी रहा हूँ मैं।

किसी का लूट कर मन यों न मुझ से रूठ जाना तुम,
तुम्हें है प्यार की सौगन्ध मत यों दूर जाना तुम। •

उन्नीस

स्नेह की पाती मिली मुझको तुम्हारी,
मिल गया खोया हुआ संसार मेरा।
प्यार मेरा।

क्या पता था जिन्दगी में यों मिलेंगे
और अगणित फूल परिचय के खिलेंगे।
गा रहे हैं गीत में सब स्वर तुम्हारे,
स्नेह पाकर जल गये हैं दीप सारे।

स्नेह की पाती मिली मुझको तुम्हारी,
मिल गया खोया हुआ आधार मेरा।
प्यार मेरा।

जानता हूँ दूर इतने पास से तुम हो गये हो,
और सपने बन गये हो, खो गये हो।
प्यार की सरिता हृदय में जब बहेगी,
जिन्दगी भर यह प्रणय-नौका चलेगी।

स्नेह की पाती मिली मुझको तुम्हारी,
मिल गया खोया हुआ संसार मेरा।
प्यार मेरा। •

बीस

आज मेरा खो गया है मन सितारों के गगन में।

चाँदनी मेरी पलक पर थिरकती है,
और चंदा बाहु में शरमा रहा है,
उम्र सारी ढल गई है यामिनी की,
गान अधरों पर किसी का छा रहा है।

बह रही बेसुध हवाएँ प्यार लेकर,
और लहरों का मिलन भी हो रहा है,
चाँदनी उन्मादिनी का रूप अनुपम,
आज कितना मधुर बन मन भा रहा है।

आज मेरा खो गया है मन बहारों के चमन में। •

इक्कीस

नीले-नीले अम्बर के पनघट पर
ज्योही रवि उदित हुआ
हरी-हरी दूबो पर
फलो पर
खेतो
खलिहानो में
शबनम की बूदो ने
सूरज की किरणो ने
सोये, अलसाये
फूलो के नयनो को
खोल दिया।

फूलो ने झोको से झुक कर
सूरज की किरणो के आगे
रग-बिरगा रूप बनाकर
नया-नया श्रृगार किया
श्वेत-गुलाबी रग-बिरगो की टोली में
एक फूल—
जिसमें रूप नही
लावण्य नही
भ्रमरो का दल देख उसी को

दूर-दूर से भाग रहा था
वही फूल
अपनी सकुचाई
मुरझाई पखुरियाँ खोले
सूरज की किरणो के आगे
हाथ जोड़कर खड़ा हुआ था
फूलो की अन्तिम कतार में। ●

बाईस

उषा की मधुर बेला में
मैंने देखा
सूरज ने चाँद पर धावा बोल दिया।

रवि-रश्मियों को देखकर
तारे शरमा गये
लजा गये
धूप के दामन में
गीत
उनके मीत
बिछुड़ गये
उनकी अठखेलियाँ
मंद हो गईं, बंद हो गईं,
उषा की मधुर बेला में
मैंने देखा
सूरज ने चाँद पर धावा बोल दिया है।

चाँद अस्त हुआ
आँखों से आंसू भरकर
प्रीति के आंगन में
तारों का रोना देख

अलसाये नयनो से
तारो का सोना देख
चाद अस्त हुआ
विलखता हुआ
सिसकियाँ भरता हुआ! ●

तेईस

ऐ भौंरे! तुम मत जाओ
इन कलियो के उपवन मे।

माना कलिया लगती है मासूम तुम्हें,
ये रग-विरगे रूपो की भी रानी है,
मुसकाने को जब ये कलियाँ मुसकाती,
अमृत की बूदो से भी मीठा पानी है।

ऐ भौंरे! तुम मत जाओ
इन कलियो के मधुवन में।

लेकिन अन्तर की बातो को तुम क्या जानो?
अन्तर तो बस पतझर का ही आंगन है,
जो भी भौरा जाता है इस बगिया में जब
वह पाता गाता शूलो का ही सावन है।

ऐ भौंरे! तुम मत जाओ
इन कलियो के कानन मे। ●

चौबीस

ज्योंही तुमने मेरी जीवन गाथा पूछी,
भरी हुई आँसू की गागर ढुलक गई,
बीते दिन की बातें फिर से उमड़ गईं।

जब मूक वेदना ने मुद्रित पलकें खोली,
उर के साहस का भी तब साहस छूट गया,
लाख कोशिशें नयनो की हो गईं मगर,
तब सागर कैसे रुके, बाँध जब टूट गया।

नाविक भी कब तक लड़े प्रबल तूफानो से,
लहरें तो ऐसी उठी कि किश्ती डूब चली।
दीपक ने की कोशिशें यहाँ पर लाख मगर,
तब कैसे दीपक जले, आँधियाँ खूब चली।

ज्योंही तुमने मेरी जीवन गाथा पूछी,
आँसू की गागर छलक-छलककर ढुलक गई,
बीते दिन की फिर याद आग-सी सुलग गई। •

पच्चीस

व्यथा सिन्धु में डूब गई तरणी, लहरे—
कम्पित स्वर में गीत सुनाकर वह जाती,
दिशा-दिशा में कण-कण में छुपके चुपके
बीती बातें मलयानिल है कह जाती।

मरुथल के प्रागण में भरमाया सावन,
उर की प्यास बढाता जाता है प्रतिपल,
चदा औ' किरणो के सँग दीपक जलता,
सूरज की आभा में खिलता हर शतदल।

तम के डेरे मे जीवन की परछाई
खो जाती आँखो में आसू भर-भर कर,
शबनम की बूदो की करुणा ढल जाती,
पात-पात औ' नन्ही-नन्ही बूदो पर।

अपनी-अपनी क्रीडा में सब जीत गये,
हारा मन भी शीश झुकाये चलता है।
आगे-आगे बहता है सागर, पीछे—
थकी हुई आँखो में आसू पलता है।

छब्बीस

रात है
महकती जुही की कली साथ है
चांद है
चादनी के तार में
प्यार है, दुलार है
पास ही कगार पर शोर है
वीणा की टूटती डोर है
अश्रु म डूबता छोर है।
कौन है ? कौन है ?

गीत है,
मीत है,
राह का, चाह का,
रूप के फूल पर
रूप के कूल पर
जिन्दगी मौन है।
कौन है ?

एक पल जिन्दगी धूप है
एक पल जिन्दगी रूप है
रग मे डूबता छोर है
हर तरफ शोर है
कौन है ? कौन है ? •

महाकवि निराला के प्रति

थके हुए नभ के पथी की गीली-गीली आँखो से
अश्रुधार बह रही आज
उस गीतिकार की ममता में बँध जाने को
उस गीतिकार की राह आज अपनाने को
वसुधा के अनगिन स्वप्न आज
चल पडे, किसी अज्ञात देश, खो जाने को।

थका हुआ हर कुसुमपात का सुरभि द्वार
रो रहा आज
उन आँखों में बस जाने को,
कर रही रास हर लहर आज
उस गीतिकार के पुण्य-द्वार तक जाने को
झुक रहा आज हर शैल-शैल
उस गीतिकार का
स्नेह आज अपनाने को। •

अठाईस

ऐ माली !
मेरी बगिया से फूलो की हर डाली तोड ले,
और,
इन्हें ले जा वहाँ
जहा मेरी छाया भी न पहुँच सके,
इनकी महक मेरी सांसो में
अटक रही है।

ऐ माली !
उन डालियो को मत छूना
जो मेरे थके पावो को
प्रतिदिन विश्राम देती है
आह्वान करती है,
उनमें एक महक न सही
कांटे तो है,
जो अपनी पीर सुनाने
मुझे वरबस बुलाया करते हैं।

शायद,
मेरे जीवन के
वे सच्चे मीत ह

गीत हू
और उनकी पीडा
अपने स्वरों में गाकर
अपना दिल बहला सकूँ। ०

उन्तीस

मैं प्यासा ही रह गया अकेले मरुथल में,
सब साथी अपनी प्यास बुझा कर चले गये,
प्यासी आँखो में अश्रु आज जब उमड पडे,
उर में कितने ही गीत दर्द मे ढले गये।

साथी मुझको अब फूलो से है मोह नही,
हर आगतुक मधुमास मुझे सूना लगता,
अब प्यास नही हर पायेगी मधु की गागर,
बादल से भी मिलती है केवल विह्वलता।

तुम मुसकानो की लहरो से मन बहलाओ,
मेरा यह प्रागण आँसू से भर जाएगा,
तुम राह बनालो भले गुलाबो पर अपनी,
मेरा जीवन काँटो मे भी पल जाएगा।

तुम दीप जलाते डरते हो मलयानिल से,
पर मेरा दीपक आधी मे भी जलता है,
तुम कूल-किनारो पर चलते हो किश्ती में,
मेरा जीवन मझधारा मे भी पलता है।

मैं माग रहा हूँ स्नेह तुम्हारा इसीलिए
मृदु प्यार किसी का पाकर ईश्वर मिलता है,
जब तक न स्नेह की धारा बरसे जीवन में,
जीवन में सुख का फूल न सुरभित खिलता है। •

तीस

कौन-सा मैं गीत गाऊँ, जो तुम्हारे मन समाये ?

राग तो आया नही मेरे स्वरो मे,
बीण के भी तार नीरव हो रहे ह ,
किस तरह म जिन्दगी के राज खोलूँ,
जब कि नभ में चाँद-तारे सो रहे है ।

कौन-सी मैं गन्ध लाऊँ, जो तुम्हें सुरभित बनाये ?
कौन-सा मैं गीत गाऊँ, जो तुम्हारे मन समाये ?

वेदना मुझको मिली है जिन्दगी मे,
किस तरह म गीत में कलियाँ खिलाऊँ ?
रोशनी से हो गई है दुश्मनी जब,
किस तरह मैं दीप की बाती जलाऊँ ?

कौन-सा मैं छन्द लाऊँ, जो तुम्हे पुलकित बनाये ?
कौन-सा मैं गीत गाऊँ, जो तुम्हारे मन समाये ? •

इकतीस

रात की थी बात
पलको में न आई नीद
उन्मन मन
अचानक स्वप्न डोले,
वर्तिका तुम दीप की पहले बुझा दो।
बुझ गई जब दीप की बाती वहा पर,
स्वप्न बोले—
अर्थ पर तुमको हुआ क्यो गर्व इतना ?
दीप की बाती नही अब जल सकेगी,
कल तुम्हारे पास आयेगा नही मधुमास
तुमसे प्यार करने।
कल नही दुत्कार पाओगे
तुम्हारे द्वार की जब हर दिशा में
'अर्थ' का बनता हुआ ककाल तुमको
जब मिलेगा!
कल नही तुम कह सकोगे
दूर हट जाओ हमारे सामने से।

ओ अपाहिज!
तुम भिखारी हो।'

भला वह क्यो भिखारी है ?
कभी सोचा नही
वह क्यो पिपासित है,
कभी पूछा नही
वह क्यो तरसता है तुम्हारे द्वार पाने
जिन्दगी में क्यो मिले दुर्दिन सभी उसको
और इतना सोचकर तुम कह रहे हो
उस भिखारी को
दूर हट जाओ हमारे सामने से !

स्वप्न बोले—
आज आये है तुम्हारे पास
बस यह बात कहने
प्यार करना सीख लो इन्सान से तुम
और लेकर प्यार का वरदान
जाओगे धरा से
स्वर्ग को तुम
स्नेह के तब दीप अनगिन जल उठेंगे
राह का हर शूल बनकर फूल
चरणो में गिरेगा
और तेरी जिन्दगी की रात
बनकर प्रात
हर पल मुस्कराएगी।

अचानक हो गये जब मौन
सारे स्वप्न मेरे
गूंजती ही रह गई आवाज कानो में
हृदय में, प्राण में, मन में। •

बत्तीस

रात भर पीर करवट बदलती रही,
दीप की वर्तिका मौन जलती रही।

अश्रु झरने लगे चाँद को देख कर,
प्रीति का फिर दरद आह भरने लगा,
प्यार की जिन्दगी की तड़प देखकर,
दीप रोने लगा, चाद हँसने लगा।

यामिनी हर पहर प्राण छलती रही,
साँस में प्यास हर वक्त पलती रही।
रात भर पीर करवट बदलती रही,
दीप की वर्तिका मौन जलती रही।

स्वप्न में सो गई जिन्दगी की घड़ी,
सास की रागिनी, प्रीति की जिन्दगी,
छुप गया चाद था, बुझ गया दीप था,
सो गये थे नयन, सो गई पीर थी।

जिन्दगी मीत के पास चलती रही,
प्रीति की रागिनी रग ढलती रही,
रात भर पीर करवट बदलती रही,
दीप की वर्तिका मौन जलती रही। ●

मलयज तेरा मन बहलाऊँ,
कैसे उर तेरा सहलाऊँ?

यह रूठापन, यह सूनापन,
यह बहकी-बहकी-सी चितवन,
हर स्वर तेरा, यह लय तेरी,
यह चंचलपन, यह अपनापन।

यह सुरभि भरा तन-मन तेरा,
बाँधे नभ के रवि, विधु, नभचर,
मुसकान लिए हर द्वार खुला,
बिखरे हैं फूल गंध पथ पर।

कैसे अंचल में भर पाऊँ?
मलयज, कैसे मन बहलाऊँ?
कैसे तेरी सुख श्री पाऊँ?
मलयज तेरा मन बहलाऊँ।•

चौंतीस

दीप का तुम स्नेह लेकर क्या करोगे,
आँसुओं का मोल लेकर क्या करोगे,
जिन्दगी तुमने नहीं वैसी गुजारी,
दर्द की दुनिया बसाकर क्या करोगे?

यामिनी हर रोज तुमसे पीर माँगेगी,
दीप की बाती नयन का नीर माँगेगी,
क्या करोगे मीत, किश्ती रुठ करके हर लहर से,
कूल से मझधार का जब प्यार माँगेगी। •

पैंतीस

मुझको नहीं स्वीकार है
एहसान तेरा
प्यार तेरा
स्नेह तेरा
और मेरे द्वार से तुम लौट जाओ।

मानता हूँ 'अर्थ'
तेरी जिन्दगी का
बन रहा शृंगार, अनुपम
और इतना सोचकर तुम
आज मुझको मिल गया
सर्वस्व मेरी जिन्दगी का,
आज मेरे द्वार पर
अगणित भिखारी गीत गाते हैं।
पर तुम्हारा दर्द,
मुझको छल न पाएगा
तुम्हारा अर्थ
मुझ पर टल न पाएगा
भले तुम शान्त कर लो
आज उर की ज्वाल वहकर
मैं अपाहिज हूँ

भिखारी हूँ
पिपासित हूँ।

लौट जाओ,
गेह अपने शीघ्र ही तुम
ले न जाये चोर तेरा अर्थ,
जो कि रक्त की हर बूंद से
सींचा हुआ, अर्जित हुआ है।

तुम्हारे धाम की इस लालिमा में
हँस रही तस्वीर उनकी,
मर गये मजदूर बनकर
और,
तेरे गेह की धरती तले
तुम जानते हो
बन रही हैं कब्र उनकी
और उनकी
मौत के उपरात
जलकर भस्म अगणित
हो गई हैं
और,
उनके विलखते बालक
तुम्हारे धाम की
चारो दिशाओ में
तुम्हारी मौत का
आह्वान करते है।

तुम वेदना से
हो अपरिचित
और, तेरा दर्प जब तक हो न जाये दूर
मेरे द्वार पर तुम गीत मत गाना। •

छत्तीस

मीत का वह प्रश्न
मेरे नयन के द्वार को तब खोल डाला
औ' अचानक हो गया
अवरुद्ध मेरा कंठ
मुखरता सब हो रही थी भंग
हृदय के तार सारे कसमसाये
और आँखों में सफर के
चित्र सारे घुमड आये।

रेल की उन पटरियों पर
सफर मेरा चल रहा था
बढ रहा था
चाँद नभ का ढल रहा था
और किरणें जग रही थी
रेल की रफ्तार भी
छूने पवन को चल रही थी।

पर अचानक
देखकर जब हो गई थी
मन्द सारी रेल की रफ्तार
झर रहा था

जिस जगह पतझार
और मेरे नयन वरवस
गड गये उस ओर
प्राणपक्षी उड रहे थे
नील घन में
छोडकर सूने भवन मे
एक शिशु को
रेल की उन पटरियो पर
दव गया था, रक्त सारा
वह गया था
और क्षण भर वाद
मुझको घेरकर करुणा
हृदय के सुप्त तारो को
जगाकर
झनझनाई।
आह! जीवन की अमरता! •

सैंतीस

आज मैंने तोड डाले
तार वीणा के सभी
जब चाँद मेरे पास आया
और अन्तिम हो रही थी
वीण की झनकार
सारा रो रहा था
स्वर भरा ससार
सारे टूटकर सब तार
उड रहे थे
आ रही थी
जिस जगह मे तीव्र झोको से
भरी बयार।

आज फिर भी हो न पाया शान्त
सारे तोड डाले
वृन्त पर से
डाल पर से फूल
जब कि प्यार करने
पास मेरे
सो रहा था
दूर से आया हुआ ऋतुराज।

आज फिर भी मन न माना
सोचकर यह तोड लूँ तारे गगन के
और तब विश्राम लूगा ,
पर करूँ क्या
मजबूर इतना हो गया हूँ
पाँव धरती के तले तब धँस रहे थे
और तारे मूर्खता पर हँस रहे थे। ●

अड़तीस

पथ अपना छोडकर मैं मन्त्रवत्-सा
चल पडा उस ओर——
आ रही थी जिस जगह् से
लहर की ललकार
बुलबुल गा रही थी
डाल पर,
हर पात पर सगीत
बनकर रूपसी-सी कर रही थी
स्वर्ण वसुधा भी जहाँ शृगार
लेकर रूप का भण्डार
लहरो के किनारे कर रही थी
एक बाला एक शिशु से प्यार।

गा रही थी कौन-सा वह गीत
जाने कौन-सा सगीत जीवन का ,
नही पहचान पाया।

भर गया अवसाद से वातावरण सारा
अचानक ढल गई हर पात से शबनम
विटप के डाल अनगिन टूक होकर
बह गये लहरो तरगो में

विहग भी उड गये जड से
विकल से, वेदना चचल।
और,
लेकर पीर मन में दीन नारी
रो रही थी
आसुओ से श्वेत वस्त्रो को
हृदय से धो रही थी। •

उन्तालीस

मेरी वीण पर कोई मौन की चादर चढा दे,
गीत मेरे अश्रु हैं उनकी कोई कीमत चुका दे।

चातकी की टेर सुनकर
आज लोचन भर गये हैं,
चाँद की उजली किरण को
मेघ छलना कर गये हैं।

टूट कर नभ के सितारे,
कह रहे हैं मीत सारे,
और मांझी की नजर से
दूर हैं दोनो किनारे।
मेरे दीप पर कोई स्नेह का आचल उढा दे,
गीत मेरे अश्रु हैं उनकी कोई कीमत चुका दे।
सास को क्या हो गया है,
क्षण-प्रतिक्षण सो रही है,
क्यो बहारो के चमन मे
जिन्दगी यह रो रही है।

आज यह कैसे दिखाऊँ
पीर के बादल घिरे हैं,

आँसुओं की इस गली में
याद के सपने घिरे हैं।

मेरी प्रीति पर विश्वास की सरिता बहा दे,
गीत मेरे अश्रु हैं उनकी कोई कीमत चुका दे। •

चालीस

उर में पीड़ा अकुलाती है,
यह व्यथा कौन सहलाती है ?

जगती के विस्तृत आँगन में
छाई है चारो ओर निशा,
अम्बर सोया, धरती सोई,
सोई है चारो ओर दिशा।

इस विकल भावना के स्वर में
ओ गीतिकार ! क्या गाते हो ?
टूटी वीणा के तारो मे
रागिनी कौन बिखराते हो ?

स्वप्नो के भीगे आँचल में
कैसी करुणा लहराती है ?
उर म पीड़ा अकुलाती है,
यह व्यथा कौन सहलाती है ? •

इकतालीस

मुझे मत छोड जाना तुम, मेरी ममतामयी करुणा !

घिरेंगे नयन मे सावन
अगर तुम भूल जाओगे,
अधर पर प्यास छलकेगी
अगर तुम रूठ जाओगे।

तुम्हारे स्नेह की बाती
हृदय को ज्योति देती है,
लहर में डूबता जब भी
हृदय की पीर लेती है।

अगर तुम भूल जाओगी
तो साँसें डूब जाएँगी,
तुम्हारी रागिनी मेरे
स्वरो मे झनझनाएगी।

मुझे मत छोड जाना तुम, मेरी ममतामयी करुणा !

बयालीस

ओ अतीत !
मैं तुम्हारे द्वार पर भीख माँगने आया हूँ,
मुझे लौटा दो, मेरी जिन्दगी,
जिसमें पीर थी,
हमदर्दी थी,
आदमी से प्यार था,
जीने का सार था।

ओ अतीत !
मुझे निराश मत लौटाना
शायद
फिर मैं न जी सकूं
तुम्हारे दिये हुए स्वरों को
न पी सकूं।

ओ अतीत !
मैं जाता हूँ
तुम्हारा दान लेकर
दूर, बहुत दूर,
शायद फिर मैं नहीं आऊँगा
तुम्हारे द्वार पर गीत नहीं गाऊँगा

और मेरी जिन्दगी
जो फूलो के गुलशन में
गुजर रही है
तुम्हें देता हूँ
क्योंकि
तुम्हारी दी हुई निराशा की (छाया)
मेरी वर्तमान जिन्दगी में है।

ओ अतीत!
भूले-विसरे, मेरी याद
तुम्हे आये
मुझे ढूंढ लेना
कही किसी कोने में
कोई वता दे
कहाँ मेरा अब डेरा है। ●

तैंतालीस

यामिनी !
क्यों रूपसी बनकर
हृदय के पास आती हो,
विकल सागर, विकल लहरें,
विकल मुझको बनाती हो।

चाँदनी !
क्यों आग-सी बनकर
हृदय को तुम जलाती हो।
विकल चिन्तन
विकल सपने,
विकल मुझको बनाती हो।

दामिनी !
क्यों नतकी बनकर,
हृदय के पार जाती हो।
विकल वाणी,
विकल वीणा,
विकल मुझको बनाती हो। •

चौवालीस

दूर इतना हो गया हूँ पास से मै,
मिल न पाऊँगा कभी तुमसे जनम में।

चाँद की दूरी सितारों को छुऊँ मैं,
है नहीं मुमकिन कि फिर भी जी रहा हूँ,
और अगणित छा रहे बादल नयन में,
घाव उर के प्यार से मैं सी रहा हूँ।

है विवशता में बँधा अब प्राण मन, पर,
भूल पाऊँगा नहीं तुमको भरम में,
दूर इतना हो गया हूँ पास से मै,
मिल न पाऊँगा कभी तुमसे जनम में।

आज सुधिया में विसुध मन खो गया है,
और विस्मृति की कहानी याद आती,
यामिनी बनकर हृदय में दामिनी-सी,
मिलन-बिछुड़न के सुनहले गीत गाती।

पास रहते, प्राण मे तुम श्वास बनकर,
पुण्य इतना था कहाँ मेरे करम में?
दूर इतना हो गया हूँ पास से मै,
मिल न पाऊँगा कभी तुमसे जनम में। •

पैंतालीस

मत इतराओ अपने तन पर
अरी पूर्णिमा !
पलभर में ही
सूय किरण के
रथ को लेकर आते होंगे
रूप तुम्हारा
विकल दाह की
लपटों में जल जाता होगा,
और किनारे
देवदारु के वृक्ष सहारे
देख तुम्हारी व्यथित विदा पर
कोई पीर जगाता होगा !
कोई नीर बहाता होगा। •

छियालीस

ओ बुलबुल !
आज मेरे सुप्त नयनो को
तुमने क्यो जगाया
प्यार मुझ पर
स्नेह मुझ पर
उमड आया।
आज मेरी जिन्दगी का
द्वार तुमने खटखटाया।

और,
मेरे देखकर
क्यो नयन गीले
आज मेरे पास आकर
कौन स्वर में
दे रही हो सान्त्वना मुझको
बताओ बात क्या है ?
आज अम्बर से उतर कर
सूर्य मेरे पास आया। •

सैंतालीस

सध्या की उदासी मे
सूरज की लालिमा
अकुलाई है।
विधु की विभा
भरमाई है।
खिली कलिया की डालियाँ,
मुरझाई है।

सध्या की उदासी सग
आई है तसवीर तुम्हारी
मेरे मन के कण-कण मे
वरसो की पीर तुम्हारी
विकल मन के उपवन मे
आई है याद तुम्हारी
विरह मन के क्रदन मे। •

अड़तालीस

गीतो ने आवाज लगायी
आँखो में घिर आये सावन।

वीणा की टूटी सरगम पर चाँद सितारे सिहर गये,
शूलो की रूठी परचम पर फूल बुहारे बिखर गये,
कूल किनारे पर किश्ती थी माँझी ने आवाज लगायी,
टूट गयी सपनो की डोरी, मीत न जाने किधर गये।

उर में पीडा के बादल है नभ को कैसे मेघ मिले,
रूठ गयी मन की मलयानिल बोलो कैसे दीप जले,
मन में एक अगर पीडा हो, चाँद सितारो के सग गालूँ,
लेकिन रोज-रोज का रोना बोलो कैसे जीत मिले।

गीतो ने वह आग लगायी
आँखो में भर आये सावन।●

उन्चास

मधु ऋतु के दिन बीत गये साथी मेरे
मौसम तुम्हें पुकार रहा पतझार का।

अब भी चाहो तो बादल घिर आयेंगे,
पलभर को मुस्काओ तो अंगार पर,
फूल सभी खिल जायेंगे हर पात पर,
पलभर को तुम गाओ तो पतझार पर।

दीप जलाकर तूफानों में देखो तो,
कितने सूरज-चाँद-सितारे आयेंगे,
मझधारों में नाव चलाकर देखो तो,
कितने विकल किनारे आगे आयेंगे।

मन अपना छोटा न करो साथी मेरे,
मौसम तुम्हें दुलार रहा मृदुहार का। •

पचास

मेरे मन के वृन्दावन में कौन बाँसुरी बजा रहा है,
मधुवन की टूटी डाली पर कौन पाखुरी सजा रहा है।

सूखी कलियाँ, कुम्हलायी-सा
करवट लेकर जाग रही ह
नेह किसी का पाने जग मे
पतझर को भी माँग रही है।

मेरे नभ के नीलाचल मे कौन चाँदनी सजा रहा है,
वीणा के सोये तारो मे कौन रागिनी बजा रहा है।

पतझर की मुस्कान हृदय में
नवतरग अब दे जाती है
कोयलिया की करुण हूक भी
नव उमग अब भर जाती है।

मेरे बुझते दीपक में अब कौन ज्योति को जगा रहा है।
शूलो में पुरवाई भर कर कौन सुरभि को जगा रहा है। •

एकावन

पनघट रहा उदास

डोली मलयानिल की हिलोर,
कलरव, कोलाहल, कठरोर,
छाया दिशि-दिशि में ओर-छोर,
हो गयी भोर, हो गयी भोर,
पर मौन रहा, पनघट उदास।

नभ के झिलमिल नीलाचल में,
लेकर तारों का नया प्रात,
धरती पर आयी नयी रात,
धरती पर छायी नयी बात,
पर मौन रहा, पनघट उदास।

वन-उपवन की शोभा सँवार,
फूलों में ले नूतन उभार,
सौरभ सुगंध मधुरस पसार,
आयी बहार, आयी बहार,
पर मौन रहा, पनघट उदास।

जब आयी नभ के राज-द्वार,
रिमझिम-रिमझिम नूपुर झंकार,

पावस की पावन अमृत धार,
सज उठे साज, बज उठे तार,
पर मौन रहा, पनघट उदास।

जो गया बीत, सो गया बीत!
जाने कैसे जागा अतीत!
हो गयी साँझ, हो गयी शीत,
आ गया मीत, छा गयी प्रीत।
पर मौन रहा, पनघट उदास। •